MPPSC
मुख्य परीक्षा
पेपर-1, पार्ट-B

Awarded for
Result Oriented Academy
For UPSC/MPPSC-2019
by **Kamal Nath** (CM M.P.)

Awarded for
Leading E-Learning
Academy of MP-2018
by **Shivraj Singh Chouhan** (CM M.P.)

स्थापना पंजीयन क्रमांक : C/177429

शर्मा एकेडमी®

an Institute for IAS/IPS, MPPSC

आपदा प्रबंधन

1 प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदाएँ

आपदा प्रबंधन – आपदा प्रायः एक अनपेक्षित घटना है जो ऐसी ताकतों द्वारा घटित होती है जो मानव के नियंत्रण में नहीं है। यह थोड़े समय में और बिना चेतावनी के घटित होती है। जिसकी वजह से मानव जीवन के क्रियाकलाप अवरूद्ध होते है तथा जान – माल का व्यापक नुकसान होता है। अतः इससे निपटने के लिए सामान्यतः दी जाने वाली वैधानिक आपातकालीन सेवाओं की अपेक्षा अधिक प्रयत्न करने पड़ते है।

आपदा प्रबंधन के प्रकार

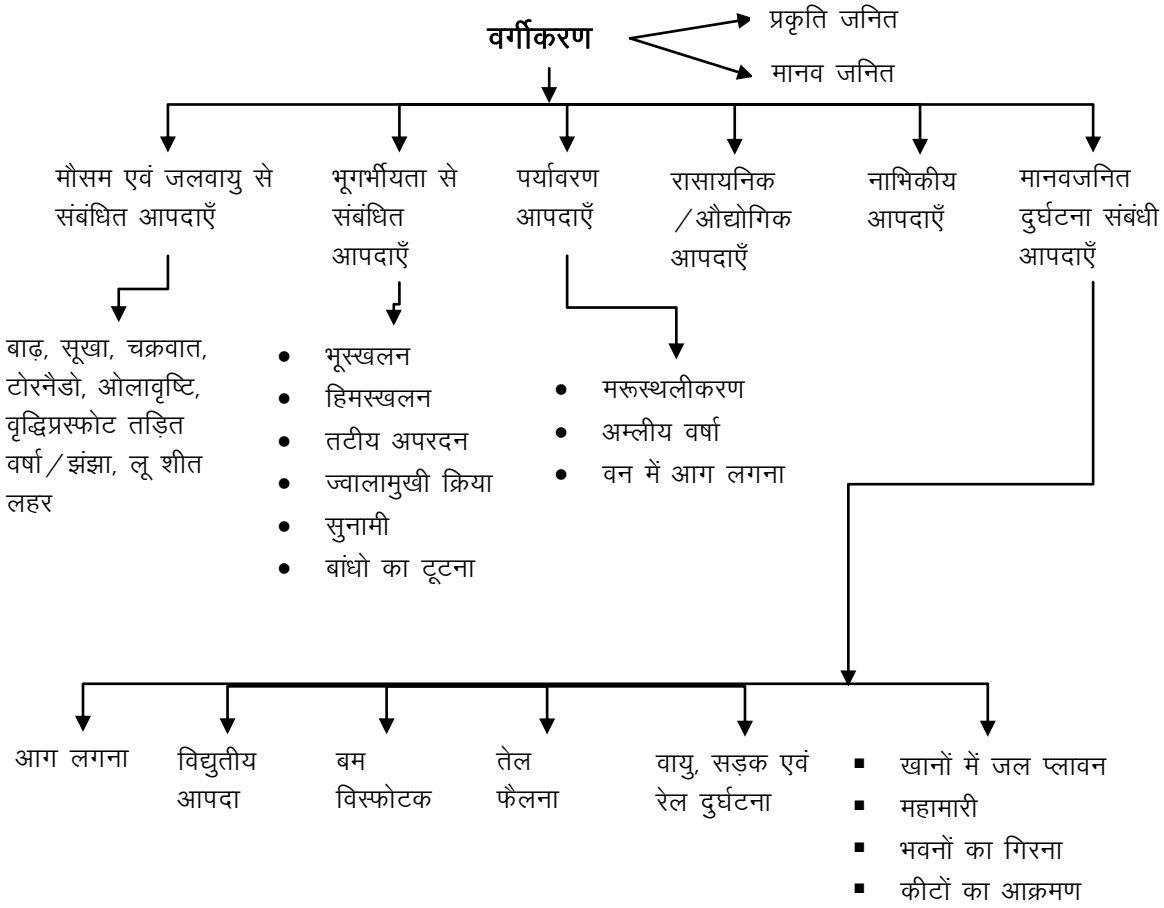

1. **प्राकृतिक आपदा :** <u>निवारण/रोक</u> लगाने की संभावना बहुत कम अतः इनसे निपटने का सबसे अच्छा तरीका है इनके असर को कम से कम करना और इनका बेहतर ढंग से प्रबंधन करना। जैसे– भूकंप, सूखा, बाढ़, सुनामी, भूस्खलन, महामारी, ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाएँ मानी जाती है।

2. **मानव निर्मित :** इनका निवारण/रोक कुछ हद तक संभव है। जैसे परमाणु आपदा, रासायनिक आपदा, खान आपदा, जैविक आपदा, आतंक व साइबर, आतंकवाद, युद्ध आदि को मानव निर्मित आपदा में शामिल किया जा रहा है।

प्राकृतिक संकट और आपदा में अंतर

संकट

1. प्राकृतिक संकट प्राकृतिक पर्यावरण के वे हालात है जिनसे जन–धन दोनों को नुकसान पहुंचने की संभावना होती है। नुकसान हो यह आवश्यक नही।
2. ये बहुत तीव्र भी हो सकते है या पर्यावरण विशेष के स्थायी पक्ष भी। उदाहरण – महासागरीय धाराये, तीव्र हिमालयी ढाल, अस्थिर संरचनात्मक आकृतियां आदि।

आपदा

1. प्राकृतिक संकट की तुलना में तीव्रतर
2. बड़े पैमाने पर जन धन की हानि, सामाजिक तंत्र एवं जीवन छिन्न–भिन्न
3. लोगों का नियंत्रण न के बराबर
4. प्रत्येक आपदा अपने नियंत्रणकारी सामाजिक– पर्यावरण घटको, सामाजिक अनुक्रिया, तथा जिस ढंग से प्रत्येक सामाजिक वर्ग इनसे निपटता है उन स्वरूपों में अद्वितीय होती है। अर्थात, दो आपदायें आपस मे न तो समान होती है न तो उनकी तुलना की जा सकती है।

पहले प्राकृतिक आपदायें एवं सकंट दो परस्पर अंतर्संबंधी घटनाएं समझी जाती थी अर्थात जिन क्षेत्रों में प्राकृतिक संकट आते थे, वे आपदाओं द्वारा भी सुभेद्य थे। तब मानव पारिस्थितिक तंत्र के साथ ज्यादा छेड़–छाड़ नही करता था। परंतु तकनीकी विकास के कारण पर्यावरण में बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप ने आपदाओं की सुभेद्यता को बढ़ा दिया है।
''कोई घटना जिसके कारण हुई क्षति, पारिस्थितिक व्यवधान, मानव जीवन की हानि स्वास्थ्य सेवाओं की अवनति आदि का सामना करने में प्रभावित समुदाय या क्षेत्र के प्रयास पर्याप्त न हो तथा बाहरी समुदाय या क्षेत्रों के ओर से असाधारण प्रयास आवश्यक हो।''

2 आपदा प्रबंधन की अवधारणाएँ एवं विस्तार की संभावनाएँ

आपदा प्रबंधन एक सुनियोजित प्रक्रिया है आपदा प्रबंधन के संघटक (जैसेः आपदा तैयारी, निवारण, निरोध, राहत कार्य, रिकवरी, पुर्नवास इत्यादि) आधारभूत सिद्धांतों पर आधारित है। (योजना बनाना, संगठन करना, नेतृत्व करना)

आपदा प्रबंधन स्तर

- आपदा पूर्व अवस्था
  - आपदा तैयारी
    - पूर्व चेतावनी
    - तंत्र
    - अभ्यास
    - प्रशिक्षण
  - निवारण
    - आपदा के विध्वंसक परिणामों, प्रतिकूल प्रभावों का न्यूनतम करने के उपाय करना
  - निरोध
- आपदा का समय
- आपदा पश्चात
  - राहत कार्य
  - रिकवरी
    - प्रभावित समुदाय के जीवन को पुनः सामान्य अवस्था में लाने की प्रक्रिया
  - पुनर्वास

जोखिम – प्रकोप की सुभेद्यता किसी प्रतिकूल घटना के द्वारा संभावित क्षति

- स्पर्शीय/पदार्थीय
  - (देखना एवं मूल्य निर्धारण) सरल
    - मानव, संपत्ति, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण
- अस्पृश्य/अमूर्त
  - (देखना एवं मूल्य निर्धारण) कठिन
    - सामाजिक संरचनाएं
    - सामाजिक क्रियाकलाप
    - अभिप्रेरणा
- फैक्टर
  - गरीबी
  - जनसंख्या वृद्धि
  - तीव्र नगरीय प्रसार
  - पर्यावरणीय निम्नीकरण
  - जागरूकता और सूचना की कमी
  - भौगोलिक अलगाव
  - आपदा प्रभाव की अधिकता
  - राजनीतिक अनिश्चितता
  - अस्थिरता

- परिणाम
- आवृत्ति
- कालावधि
- क्षेत्रीय विस्तार
- स्थानिक संकेंद्रण प्रसार
- प्रारंभ की गति
- नियमितता

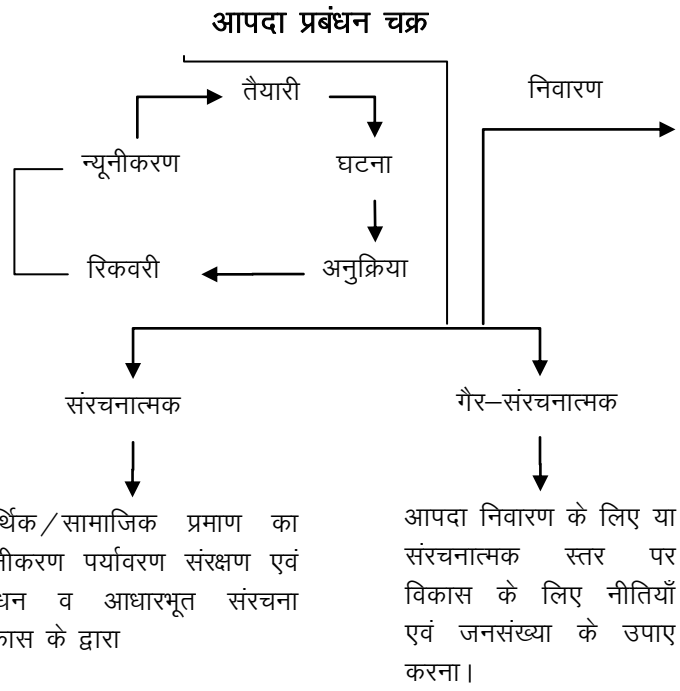

निवारण से अभिप्राय आपदा घटित होने से पूर्व आपदा के प्रभावों के न्यूनीकरण से संबंधित सभी उपायों से है। इसके अंतर्गत तैयारी एवं दीर्घकालिक जोखिम न्यूनीकरण के उपाय आते है।

निवारण में निम्न क्रियाकलाप शामिल हो सकते है।

1. आपदा प्रबंधन और सुभेद्यता न्यूनीकरण
2. आर्थिक विविधिकरण – आपदा प्रतिरोधी आर्थिक गतिविधियों का विकास। जैसे– बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में विनिर्माण, प्लांट के बजाय गोदाम निर्माण किया जा सकता है।
3. राजनीतिक हस्तक्षेप / प्रतिबद्धता
4. जन जागरूकता

निवारण में ध्यान रखने योग्य बातें

- अलग–अलग तरह की आपदाओं के लिए अलग–अलग संरचनात्मक उपाय की आवश्यकता पड़ती है। जैसे– हरिकेन के लिए बनायी गयी संरचना को भूंकप आने पर क्षति पहुँचा सकती है। अतः पहले इसका विश्लेषण करना चाहिए कि कौन सी आपदा किस क्षेत्र में सबसे अधिक संभावित, बारंबारता वाली तथा विनाशकारी है। इसके अलावा निवारण प्रयास सटीक सुभेद्यता पर भी निर्भर करता हैं।
- आपदा रिकवरी – प्रभावित समुदाय के जीवन एवं अवसंरचना को पुनः पूर्व की भाँति सामान्य अवस्था में लाने संबंधी गतिविधियाँ।

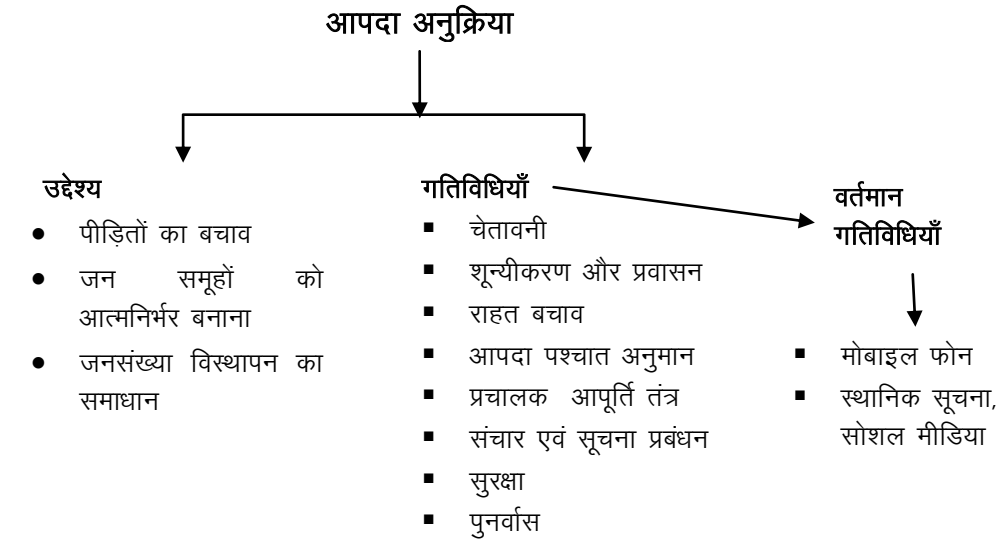

आपदा विकास की पहल का अवसर

- आपदा निःसंदेह बड़ा संकट है, परंतु कई मामलों में आपदा एक वृहत विकास कार्यक्रम की वाहक हो सकती है। क्षति का राजनीतिक प्रभाव परिवर्तन को अभिप्रेरित कर सकता है। आपदा प्रेरित विकास के दो मुख्य पहलु देखे जा सकते हैः
- आपदा की संभावना या आपदा उपरांत अनुक्रिया के दौरान राजनीतिक प्रशासनिक वातावरण आर्थिक सामाजिक परिवर्तनों के अधिक अनुकूल होता है।

1. **सुभेद्यता को कम करने के उपायः**
   - गरीबी
   - जनजागरूकता
   - कमजोर भवन संरचना
   - संचार तंत्र आदि को मजबूत करने के उपाय

2. **रिकवरी –** भूमि सुधार, नई नौकरियों के लिए प्रशिक्षण, आर्थिक आधार की पुनर्संरचना।

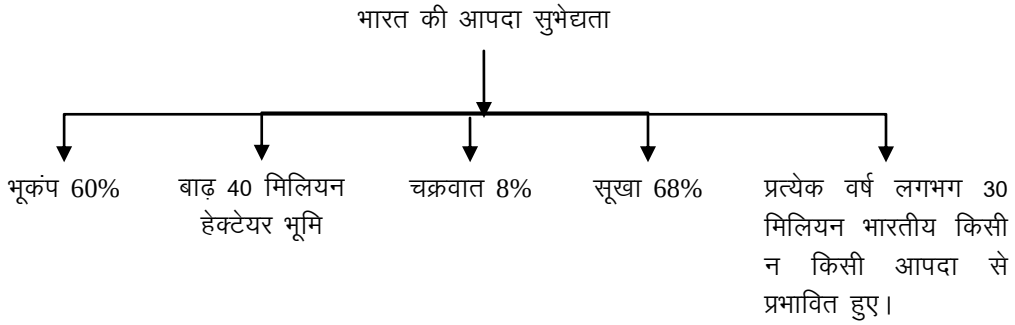

- भारत अपनी विशिष्ट भू–जलवायु परिस्थितियों के कारण पारंपरिक रूप से प्राकृतिक आपदाओं से सुभेद्य रहा है। भारत में बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूकंप एवं भूस्खलन आदि पुनरावृत्ति से घटित होने वाली प्राकृतिक आपदायें है। इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए UN ने **1990–2000** के दशक की ''अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण दशक'' घोषित किया था।

यूएनआईएसडीआर

- संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय आपदा शमन रणनीति (यूएनआईएसडीआर) के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के मामलें में चीन के बाद दूसरा स्थान भारत का है। भारत में आपदाओं की रूप–रेखा मुख्यतः भू–जलवायु स्थितियों और स्थलाकृतियों की विशेषताओं से निर्धारित होती है और इनमें जो अंतर्निहित कमजोरियाँ होती है। उन्हीं के फलस्वरूप विभिन्न तीव्रता की आपदाएँ वार्षिक रूप से घटित होती रहती है।
- आवृत्ति, प्रभाव और अनिश्चितताओं के लिहाज से जलवायु–प्रेरित आपदाओं का स्थान सबसे ऊपर है।

भारत में आपदा की परिचयात्मक स्थिति

- भारत के भू–भाग का लगभग 59 प्रतिशत भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है। (गृह मंत्रालय 2011) हिमालय और उसके आसपास के क्षेत्र, पूर्वोत्तर, गुजरात के कुछ क्षेत्र और अंडमान – निकोबार द्वीप समूह भूकंपीय दृष्टि से सबसे सक्रिय क्षेत्र है। देश के 68 प्रतिशत भाग में कभी हल्का तो कभी भीषण सूखा पड़ता रहता है। 38 प्रतिशत क्षेत्र में 750–1125 मिमी. वर्षा होती है, तो 33 प्रतिशत क्षेत्र में 750 मिमी. से कम वर्षा होती है।
- भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्यों कें मुख्यतः शुष्क, अर्द्ध–शुष्क और कम नमी वाले क्षेत्रों में आमतौर से सूखे से प्रभावित होना पड़ता हैं हालांकि देश के सभी नदी घाटी इलाकों में बाढ़ का प्रकोप छाया रहता है, परंतु असम, बिहार, गुजरात, उत्तरप्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में प्राय प्रतिवर्ष बाढ़ आती है। भारत कें 7,500 किमी. लंबे तटवर्ती क्षेत्र का लगभग 71 प्रतिशत (5.300 किमी.) भूकंप के प्रति संवदेनशील है। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, आंध्र प्रदेश, ओड़िशा, तमिलनाडु और पुडुचेरी में प्रायः भूकंप के झटके आते रहते हैं।
  प्राकृतिजनित आपदाओं से भारत को कई प्रकार की क्षति उठानी पड़ती हैं। अन्य विकासशील देशों की तुलना में भारत पर इसका आर्थिक प्रभाव भी अधिक पड़ता है।
- प्राकृतिक आपदाओं से सीधे तौर पर होने वाली क्षति का अनुमान भारत के सकल घरेलू उत्पाद के 2 प्रतिशत और केन्द्र सरकार के राजस्व के 12 प्रतिशत के बराबर होने का लगाया गया है।
  (विश्व बैंक, 2003 एवं 2009)
  इसका अर्थ यह भी है कि पिछलें अनेक वर्षो के दौरान आर्थिक, भौतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय विकास की उपलब्धियां बार–बार घटित होने वाली आपदाओं में धुल जाती है। आपदाओं से यह बात भी उजागर हो जाती है कि ये किन निर्णयों के सम्मिलित प्रभावों का परिणाम है।
- इनमें से कुछ निर्णय व्यक्तिगत होते है, कुछ सामूहिक, तो कुछ गलती से लिए जाते हैं। विभिन्न आपदाओं से मानव मात्र पर पड़ने वाले प्रभाव से होने वाली क्षति के बारे में कुछ और खुलासा होता है। 1967 से 2006 के दौरान भारत में जो आपदाएं आई, उनमें से 52 प्रतिशत बाढ़ के कारण, 23 प्रतिशत चक्रवात के कारण और 11 प्रतिशत भूकंप और 11 प्रतिशत भू–स्खलन के कारण हुई। परंतु सबसे अधिक लोग भूकंप में हताहत हुए, उसके बाद बाढ़ और चक्रवात से। सबसे अधिक सूखे से लोग प्रभावित होते है। सूखे की प्रकृति ही ऐसी होती है कि उसका प्रभाव लंबे समय तक बना रहता है।

जोखिम वाले राज्य

- भारत में राज्य में आपदाओं के जोखिम की विस्तृत रूपरेखा को दर्शाने वाला केवल एक ही दस्तावेज है 'वल्नरेविलिटी एटलस' जिसे भवन निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकी संवर्धन केन्द्र (बीएमटीपीसी) ने तैयार किया है।
- बीएमटीपीसी द्वारा 1997 में प्रकाशित इस एटलस का नया संस्करण 2006 में तैयार किया गया था और उसमें विभिन्न आपदाओं से संबंधित ताजा जानकारियाँ दी गई थी। इस एटलस में भौतिक आपदाओं को भी सम्मिलित किया गया है।
- उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में बाढ़ की संभावना अत्यधिक हो सकती है, परंतु वहाँ चक्रवात की संभावना नही हो सकती। राज्यों की तुलना करने में जटिलता को देखते हुए 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए आपदा प्रबंधन पर कार्यकारी समूह ने आपदा के कारण हुई विभिन्न प्रकार की क्षतियों के अनुसार राज्यों का क्रम निर्धारित किया हैं। इससे पता चलता है कि शीर्ष 10 राज्य अधिकांश श्रेणियों में एक समान है।